

Shri Saraswati Puja

Date : 3rd February 1992
Place : Kolkata
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 04
English	-
Marathi	-

II Translation

English	05 - 07
Hindi	-
Marathi	08 - 12

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

इस कलियुग में माँ को पहचानना अति कठिन कार्य है। हम अपनी माँ को भी नहीं पहचान सकते, मुझे पहचानना तो बहुत कठिन है। परन्तु इस योग भूमि का आशीर्वाद आप में कार्य कर रहा है। मैंने देखा है कि इस क्षेत्र के सभी सहजयोगी अति गहन हो जाते हैं। परन्तु मैं हैरान हूँ कि जहाँ मैंने इतने वर्ष लगाए और इतना कार्य किया, वहाँ लोग इतने गहन नहीं हैं। उनकी सामूहिकता यहाँ की तरह सुन्दर नहीं है। इस भूमि की विशेषता यह है कि यहाँ सामूहिकता तथा प्रेम पूर्णतया निस्वार्थ है। मैं ये सब देख कर अति प्रसन्न हूँ और कामना करती हूँ कि आप सब उन्नति करें।

यहाँ महा सरस्वती की पूजा होना अति आवश्यक है। देवी के आशीर्वाद से यहाँ सब कुछ हरा भरा है। यहाँ पर गरीबी और दुःख का कारण यह है कि यहाँ सरस्वती की पूजा बहुत सीमित रूप से हुई। यहाँ सरस्वती की पूजा केवल कलात्मकता को बढ़ाने तथा विद्वान बनने के लिए की जाती है। निःसन्देह विद्वता और कला के क्षेत्र में यहाँ उन्नति हुई। यहाँ के लोग अति बुद्धिमान तथा स्वाभिमानी हैं। परन्तु फिर भी यहाँ गरीबी क्यों है? अपने से अधिक वैभवशाली व्यक्ति के प्रति यहाँ ईर्ष्या क्यों है? व्यक्ति को समझना है कि हममें कहाँ कमी है।

सरस्वती का कार्यक्षेत्र शरीर का दायी भाग है। स्वाधिष्ठान पर कार्य करके जब ये बायीं ओर को जाती है तो कला-विवेक बढ़ता है। कला के क्षेत्र में बंगाल बहुत प्रसिद्ध है। संगीत, ड्रामा, मूर्तिकला और साहित्य क्षेत्र में। इन क्षेत्रों में यहाँ बहुत प्रसिद्ध लोग हैं। कला परमात्मा की ज्योति है। आप इसे न देख सकें पर इसमें चैतन्य लहरियाँ हैं। सुन्दरतापूर्वक रचित तथा विश्व भर में मान्य सभी कुछ सौन्दर्य की दृष्टि से उत्तम है। यदि आप अपने हाथ इसकी ओर फैलायें तो आपको इसमें से लहरियाँ निकलती हुई महसूस होंगी, विशेषकर यदि इस कला की रचना किसी साक्षात्कारी व्यक्ति ने की हो। यहाँ के लोग अति श्रद्धालु हैं और कलाकृतियाँ अति सुगमता से सबको समझ में आ जाती हैं। बंगाल के लोग अति कुशल हैं। परन्तु हमने स्वाधिष्ठान का एक ही भाग विकसित किया है, दूसरे भाग को हमने अनदेखा कर दिया है। स्वाधिष्ठान का उपयोग हम केवल पढ़ने-लिखने के क्षेत्र में ही करते हैं और इस क्षेत्र

में हमने उन्नति की है।

पर इससे आगे भी एक अवस्था है जिसके विषय में हम सोचते ही नहीं, और इसी कारण यह असन्तुलन है। आप देखते हैं कि कला-साहित्य आदि बहुत है फिर भी लोग कहते हैं कि सरस्वती और लक्ष्मी का संगम नहीं है। गहनता में जाने पर हम इस असन्तुलन का कारण जानना चाहते हैं। सहजयोग में सरस्वती और लक्ष्मी आज्ञा चक्र पर मिलती हैं। आप कार्य करते रहते हैं पर आपको इच्छा के अनुसार फल नहीं मिलता। आज्ञा पर आकर आप जान पाते हैं कि आपको वह अवस्था क्यों नहीं प्राप्त हुई जो बहुत से कलाकारों को प्राप्त हुई। हम गरीबी में क्यों रह रहे हैं? दोनों तत्वों को उचित दृष्टि से देखे बिना हम उन्नति नहीं कर सकते। कला (सरस्वती) को लक्ष्मी से जोड़ने के लिए हममें शुद्ध दृष्टि होनी चाहिए।

जिद्दीपना हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। इन्होंने यदि एक हाथी बनाया है तो हाथी ही बनाते चले जायेंगे। किसी एक विशेष तरह से यदि वे गाते हैं तो वैसे ही गाते चले जायेंगे। इसमें परिवर्तन करने के लिए कहें तो वे नाराज हो जायेंगे। आज्ञा चक्र पर यदि आप विचार करें तो आपको पता चलेगा कि जिद्दीपना आपको आज्ञा से ऊपर नहीं जाने देता। "हम बंगाली हैं। हम महान कलाकार तथा बुद्धिमान हैं"। हममें जिद्दीपना है कि हम बंगाली महान लोग हैं। मैं नहीं कहती कि आप कला को बिगाड़ें। पर आप सन्तुलित ढंग से तो कला को देखिए। मैं आपको व्यवहारिकता की बात बताती हूँ कि हममें एक प्रकार का आलस्य है जो हमें जिद्दी बनाता है। कोई नई बात सीखने में हमारे मस्तिष्क थोड़े से शिथिल हैं। इसी शिथिलता के कारण हम कुछ भी ऐसा नहीं सीख पाते हैं जिससे हम लक्ष्मी से जुड़ सकें। जैसे मैंने जब कुछ दस्तकारों से पसों की बनावट में कुछ परिवर्तन करने को कहा तो उन्होंने कहा कि ऐसा करना सम्भव नहीं। हम इन्हें ऐसा ही बनायेंगे। आपकी इच्छा के अनुसार हम नहीं बना सकते। "आप कोई मलाह नहीं दे सकते"। अतः सूझबूझ होनी चाहिए तभी मस्तिष्क खुलेगा। जिद्दीपन का कुप्रभाव व्यक्ति के पूरे जीवन पर पड़ता है। सहज में आने पर परिवर्तन आता है। तब सहज ही मैं हम लक्ष्मी से जुड़ जाते हैं। आज्ञा चक्र को ठीक करने

के लिए आवश्यक है कि हम अपने अहं को ठीक करें।

हिन्दु, मुसलमान, इसाई या ब्रह्म-समाजी होने की भावना आधारहीन है। मानव मात्र के अतिरिक्त आप कुछ भी नहीं। आपने अपने पर लेबल लगा लिए हैं। न आप बंगाली हैं न मराठी। आप केवल मनुष्य हैं। लेबल लगाकर आप अपनी समस्याएं बढ़ाते हैं। ये लेबल इतने आवश्यक बन जाते हैं कि इनसे परे आप कुछ देख नहीं पाते। इस बन्धन से छुटकारा पाए बिना आप अन्धकार से नहीं निकल सकते। पश्चिम में भी यह समस्या है। आप यदि उन्हें कह दें कि यह बात अच्छी है तो वे बिना सोचे समझे इसका अनुसरण करने लगते हैं। आलोचक वहाँ पर हर तरह की कला की आलोचना करते हैं। एक आलोचक दूसरे आलोचक की आलोचना करता है। कला का सृजन रुक गया है। लोगों में अहंकार बढ़ रहा है।

सत्य-सार यह है कि हम सब एक हैं, एक विराट, एक पूर्णता। इसके विपरीत जाने से आप अकेले पड़ जाते हैं तथा सामूहिकता से अलग हो जाते हैं। यह ठीक है कि पेड़ का एक पत्ता दूसरे पत्ते जैसा नहीं होता फिर भी वे होते तो एक ही पेड़ पर हैं। वे सभी एक विराट के अंग-प्रत्यंग हैं। जब हम एक दूसरे से अलग हो जाते हैं तो हमारा सरस्वती तत्व महा सरस्वती तत्व नहीं बन पाता। महासरस्वती तत्व में जब आप रहने लगते हैं तो आप देख सकते हैं कि आप विराट हैं। ऐसी स्थिति में जब कलाकार कोई सृजन करता है तो लोग इसे हृदय से स्वीकार करते हैं। कला का जो भी कार्य हम करते हैं वह परमात्मा को समर्पित होना चाहिए। इस भाव से की गई सभी रचनाएं शाश्वत होंगी। परमात्मा को समर्पित सभी कविताएं, संगीत और कला कृतियां आज भी जीवित हैं। आज का फिल्म संगीत आता है और समाप्त हो जाता है परन्तु कबीर और ज्ञानेश्वर जी के भजन शाश्वत हैं। अपने आत्मसाक्षात्कार द्वारा उन्होंने महासरस्वती शक्ति से प्राप्त किया और फिर जो भी रचना उन्होंने की वह बेजोड़ थी। इन रचनाओं ने विश्व को एक सूत्र में बांधा। तो व्यक्ति को सरस्वती तत्व से महासरस्वती तत्व की ओर जाना चाहिए क्योंकि सरस्वती तत्व यदि बीज है तो महासरस्वती तत्व पेड़ है। बिना इस बीज को वृक्ष बनाए आप महालक्ष्मी से नहीं जुड़ सकते। आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति भी महालक्ष्मी का वरदान है। महासरस्वती, महाकाली तथा महालक्ष्मी तीनों शक्तियां आज्ञा पर मिलती हैं। वहाँ पर सूक्ष्म रूप में अहं भी है। अतः व्यक्ति को अन्तर्दर्शन कर देखना चाहिए कि सीमित स्तर पर रहते हुए मैं कैसे पूरे विश्व को प्रकाशित कर सकता हूँ। मैंने बहुत बार कहा है कि अपने अन्दर झाँकिए। बहुत से लोग देवी की तरह मुझे पूजते हैं। पर

इसका मुझे क्या लाभ है? मैं तो जो हूँ वो हूँ। मेरे प्रति श्रद्धा से आप ही को लाभ होता है। आप सहजयोग में आए और सरस्वती तत्व से महासरस्वती तत्व को प्राप्त किया। मुझ में विश्वास करने मात्र से ही आपको सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। आपको स्वयं में विश्वास करना होगा तथा अपना उत्थान करना होगा।

अब आप सहजयोग विज्ञान को समझ गए हैं। आपका दीप जला दिया गया है। इस दीप से आपने हजारों अन्य दीप जलाने हैं। मुझे प्रेम करना अच्छा है पर इससे आगे भी बहुत कुछ है। आनन्द से आगे एक ओर अवस्था है – निरानन्द। निरानन्द की वह अवस्था आपकी माँ को तब मिल पाएगी जब वह देख लेंगी कि उनके बच्चे उनसे भी आगे निकल गए हैं। पर इन छोटी-छोटी चीजों का मोह हमें त्यागना होगा। महाराष्ट्र के लोगों में व्यर्थ की चीजों से मोह बहुत अधिक है। हो सकता है कि यह पूर्व जन्म के पापों के कारण हो। सुकृत्यों के फल से तो तुरन्त हृदय खुलता है और एक फूल की तरह सुगन्ध बिखरने लगता है।

महासरस्वती में व्यक्ति समर्थ और चुस्त होता है। महाकाली में आप इच्छा करते हैं तथा आत्मसात करते हैं। इन इच्छाओं को कार्यान्वित करना महासरस्वती का कार्य है। कुछ लोग चाहते हैं कि सहजयोग फैले। पर इस दिशा में आपने क्या कार्य किया? आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया? कितने लोगों से सहजयोग की बात की? एक अखबार वाले ने मुझे बताया कि शान्ति और मर्यादापूर्वक पोस्टर लगाते हुए सहजयोगी लड़के-लड़कियों से वह बहुत प्रभावित हुआ। अपनी इच्छाओं को कार्यान्वित कीजिए। कार्य शुरू होते ही इच्छाएं समाप्त हो जायेंगी। जो पूरा हो सके ऐसी इच्छाएं आपको करनी चाहिए क्योंकि असम्भव इच्छाएं करना भयंकर है।

यहाँ पर बहुत से लोग धनी हैं और बहुत से गरीब, धनी लोगों को भी बहुत सी समस्याएं हैं। वे बताते हैं कि मजदूरों के कारण उनकी फैंक्ट्रियां बन्द पड़ी हैं। परन्तु धनी लोगों को याद रखना चाहिए कि मजदूर उनके अंग-प्रत्यंग हैं। उनके बिना आप कुछ नहीं कर सकते। आप तो हाथ भी हिलाना नहीं जानते, बस कुर्सी पर बैठे रहते हैं। मजदूरों के लिए आपने क्या किया? पैसे से तो सभी कार्य नहीं हो सकते। वे झंडा उठाते हैं और आप उनका वेतन बढ़ा देते हैं। और यह सब चलता रहता है। आपने उनके हित के लिए कुछ किया? सबसे पहले उनकी संस्कृति को सीखिए। मजदूर बहुत बड़े दिल के होते हैं। पर यदि आप घमण्ड से उनसे बात करेंगे तो वे सबसे बड़े शत्रु भी बन सकते हैं। उनके साथ रहिए, उन्हें मिलिए, उन्हें जानिए। मैं

इसे प्रकाशित उद्यम कहती हैं। उनके घर जाकर उनको समस्याएं पूछिए। उनके लिए आप इतना सा कीजिए और वे जीवन भर के आपके सेवक होंगे। हर बात पर पैसा देना आवश्यक नहीं। यदि आप पैसे देंगे तो या तो वे दारु की दुकान पर पहुंचेंगे या बुरी औरतों के पास। अपना अंग-प्रत्यंग मानकर उनके दिलों को समझिए। तब आपकी मजदूर संबंधी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

यहाँ लोग सरस्वती तक ही सीमित हैं, महासरस्वती तक नहीं। आप सहजयोगी हैं। सभी कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। परन्तु आपको सहजयोग की राह पर चलना होगा। अपनी संकीर्णता को छोड़कर आपको विशाल होना होगा। अन्दर से उन्नत हुए बिना आप बाहर से विस्तृत नहीं हो सकते।

सहजयोग में ध्यान-धारणा अति आवश्यक है। प्रातः पाँच बजे पाँच मिनट ध्यान कीजिए और रात को दस मिनट। इतने से ही आप शुद्ध हो जायेंगे और आपको आशीर्वाद मिल जायेंगे। हर समय आपको रास्ता दिखाया जा रहा है। आनन्द लेते हुए आप विकसित हो रहे हैं।

लोग अब भी सोचते हैं कि माँ से प्रेम करना, उनकी सेवा करना और प्रार्थना करना ही काफी है। अच्छी बात है। आपका हित भी होता है। माँ के प्रेम में, हो सकता है, आप बहुत गहरे उतर गए हों। पर ऐसे गहरे घड़े का क्या फायदा जिससे कोई पानी न ले सके। आज्ञा पर यदि आप सोचें कि मैं क्या कार्य करूँ तो कोई लाभ नहीं। निर्विचारिता की अवस्था में आपको अन्दर से प्रेरणा प्राप्त होगी। यहाँ पर बहुत गहन लोग हैं, पर अब हमें वह गहनता दूसरों के साथ बांटनी होगी। तालाब में कमल खिलने पर तालाब के कौड़े उन पर गर्व करते हैं। पर इसका उन्हें क्या लाभ। आप भी यदि उन कौड़ों की तरह हैं तो बेकार हैं।

वेदों में लिखा है कि यदि आपको ज्ञान नहीं है तो वेदों का क्या लाभ। उन्होंने पंचमहाभूतों को जगाने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप हमारे देश में विज्ञान आया। वैज्ञानिक खोज जो यहाँ की गई वह आज की खोज से उत्तम है। सहजयोग में भी आप पंचमहाभूतों को वश में कर सकते हैं। पर आप लोग अब भी कहते हैं "श्री माताजी मेरी माँ या भाई या परिवार बीमार है"। आप एक सहजयोगी हैं। आप चाहते हैं कि माँ सब कुछ करें। आप क्यों नहीं कर सकते? दूसरों को देने का प्रयत्न कीजिए। मैं बार-बार कहती हूँ कि आप स्वयं कुछ कीजिए। मैं तो ठीक करूँगी ही, पर आप मेरे से ज्यादा अच्छी तरह ठीक कर सकते हैं। अगर आप उन्हें ठीक नहीं कर सकते तो

मेरे पास आ जाइए। आप जितना अपनी शक्तियों का उपयोग करेंगे उतनी ही अधिक वे बढ़ेंगी। स्वयं पर विश्वास रखिए। जब माँ ने कहा है तो अवश्य ही हममें वे शक्तियाँ होंगी। हमें चाहिए कि इन शक्तियों को बढ़ायें। अब सहजयोग में गहनता तो आ गई है पर इसे इतना अधिक बाँटा नहीं जा रहा। अब आपको सहजयोग देना है। जब आप इस कार्य में लग जायेंगे और महासरस्वती तत्व जागृत हो जाएगा तो इस देश की उन्नति देख आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे। परन्तु पूरे भारतवर्ष में आलस्य का यह रोग है।

सहजयोगी किसी कार्य को न कर पा सकने के लिए बहुत बहाने करते हैं। उदाहरणतया "मुझे लोगों से या परिवार से डर लगता है" आदि। कार्यों के लिए सहजयोग नहीं है। यहाँ पर इतनी काली विद्या और तांत्रिकों का प्रकोप है। मैं इसे साफ करती रही हूँ। काली विद्या को दूर करने के लिए आपको विशेष ध्यान देना होगा और इसके लिए कार्य करना होगा।

यह पूजा पूरे भारत के लिए है क्योंकि आलस्य का रोग पूरे देश में है। हम बिल्कुल भी चुस्त नहीं हैं। हमारी इच्छाएँ तो बहुत दृढ़ हैं पर उनकी पूर्ति के लिए हम कुछ भी नहीं करते। एकत्रित होकर सोचिए कि सहजयोग फैलाने के लिए आप क्या कर सकते हैं। हमने बहुत कार्यों के लिए जमीन खरोदी है पर वह पड़ी सड़ रही है। जब तक मैं भारत नहीं आती ये लोग एक छोटी सड़क या एक झोंपड़ी तक भी नहीं बना सकते। मेरी समझ में नहीं आता कि इतने लोगों के होते हुए भी कोई कार्य नहीं होता। मेरे जाते ही आप सब अलग-अलग हो जाते हैं तथा मनमानी करते हैं। केवल दो-तीन लोग ही कार्य करते हैं। सहजयोग सामूहिक कार्य है, दो या तीन व्यक्तियों का कार्य नहीं। व्यक्ति को समझना चाहिए कि हर सहजयोगी सहजयोग का एक हिस्सा है। एक अंगुली पर जब चोट लगती है तो पूरे शरीर को दर्द महसूस होता है। सहज में सभी कुछ स्वचालित है। पर यह संकीर्णता तथा अज्ञानता कि "मैं कुछ विशेष हूँ" आपको कुछ न करने देगी।

आपने इतनी गहनता प्राप्त की है और बहुत कुछ पा लिया है। अब आप दूसरे लोगों को दें। कल आपको मेरे स्थान पर बैठ कर मेरा कार्य करना पड़ सकता है। ऐसा होने पर ही सहजयोग उन्नति करेगा। आज आप सबको मेरा आशीर्वाद है कि इस पूजा के बाद बहुत से लोग आगे बढ़ें तथा सहजयोग को फैलाने का कार्य करें।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

In this Kali Yuga it is very difficult to recognize the Mother. We cannot even know our own mother then to know me is even more difficult. But the depth of this Yoga bhumi is working in you. I have seen that whichever Sahaja Yogi has come from this part becomes very deep. And I am surprised that where I spent so many years and worked such a lot, the people there are not so deep. They do not have such beautiful collectivity as is here. The speciality of this land is that the collectivity and love is absolutely selfless and unselfish. I have been very pleased to see this and may you progress.

It is very important that there should be worship of Maha Saraswati here. The Devi has blessed this land and everything is so green here. The reason for poverty and suffering here is because the worship of Saraswati has been very limited. The puja of Saraswati is done here only to increase our artistic talents or to become scholars. No doubt the people here have progressed on the scholastic and artistic fronts. People here are very intelligent and proud. But still why is there poverty? Why is there jealousy towards a person who has more money than you? One must understand what formula we are lacking which we must get.

The work of Saraswati is on the right side. When she works on the Swadhistan and when this goes on the left side then the sense of art grows. Bengal is very famous in every art field. In music, drama, sculpture and literature. There are very famous people in these art forms here. Art is the light of the Divine. You cannot see it but it has vibrations. Whatever is very beautifully created and recognised by all the people all over the world is aesthetically rich. If you put your hands towards it you will find vibrations flowing from them, especially if it is made by a realised soul. The people who live here are very devotional and the art forms here are easily understood by all. People of Bengal are perfectionists. But we have developed only one side of the Swadhistan and have neglected the other.

We use the swadisthan only for reading, writing and we have progressed in these fields.

But there is a further state than this about which we don't think, and that is why there is imbalance. When you see there is a lot of art, literature, etc. and people say there is no union of Saraswati and Laxmi. This means that whatever you are doing when you go into its deeper aspect, then you think why there is no union with Laxmi. In Sahaja Yoga both meet at the Agya chakra. You keep on working but you do not get the result that you desire. When you come into Agya chakra you realise why we have not got that state which so many artists have got. Why are we living in poverty? Till we do not reach that state where we see both aspects with correct perspective we cannot progress. To unite Kala (Art) with Laxmi we need proper vision.

One of our greatest weaknesses is stubbornness. If they have made an elephant they will go on making elephants. If they sing in a particular way they will go on singing in that way. If you tell them to change it they may get angry. At Agya if you contemplate then you realise that stubbornness does not let you go beyond Agya chakra. "We are Bengalis. We have the greatest artists, intellectuals." We have this stubbornness that we are great people in Bengal. But if you want to rise above that we must realise that we do not have to compromise. I don't say that you destroy art. But you must think of art in a balanced manner. I am telling you something practical, that we have a certain laziness in us by which we can also become stubborn. A person thinks that by creating something new I will have to exert. For learning something new our brains are a bit slow. Because of this slow brain we are not able to learn anything by which we can unite with Laxmi. Like I told some artisans not to make such elaborate purses but to make simple lines. He said, "this was not possible. We will make it like the way we are used to. We cannot make it the way you want. You cannot make any suggestions. So there must

be an understanding; then the brain opens out. But if you are stubborn and say that whatever I do is correct and what anyone tells me is not so. This stubbornness can have a very great effect on a person's entire life. We are like and will remain so. When the change comes it is in a very Sahaja way and in this Sahaja way you find the union with Laxmi. Artists are very stubborn. If you tell them please change this a bit they will not do that. To put the agya chakra right we must first put right this strange ego which says that whatever we do and the way we do is right and no other suggestion or method is correct.

This feeling that you are Hindus, Muslims, Christians, Brahma Samajis etc has no base. You are nothing but a human being. You were born a human. You have branded yourself that you are something. You are neither Bengali or Marathi. You are just human beings. By branding yourself you create more problems. These brands become so important that you cannot see anything beyond it. Till this catch does not release this blindness will not go because you see everything in such a way that only your way is right. In the west it is even more so. If you put anything into their brains and tell them that it is good, then they will follow it blindly. The critics there also criticize every art form so much. Another critic will refute what the first critic has refuted. Nothing comes to you from within yourself and your brain. Whatever others have filled in is accepted. Each is branded. By this the ego rises and a person thinks that he is a very great personality and very unique from others. He becomes an individual.

The essence of truth is that we are all one, are whole, are a totality. When you go in opposition to it then you become individualistic and go on becoming more and more separate. It is true that one leaf does not resemble another but all of them are on the same tree. They are all a part and parcel of the Virata. When we separate ourselves then the Saraswati tattwa which should become Maha Saraswati does not. When you live in Maha Saraswati tattwa you start seeing in your daily life that you are the whole, and we are one. So when an artist creates he makes some such thing that one accepts from the heart. All the works that we do of Saraswati should be dedicated and surrendered to the Divine. If this happens then all such works will be immortal. All poems, music,

songs, art forms which were offered in the name of God are still living today. Like today's film music comes and dies down. But the songs of Kabir, Gyaneshwar are still remembered. Through their self-realisation they obtained the Maha Saraswati shakti and whatever they wrote or created that light was of a unique kind. These were creations that united the world into one. One should not only move on Saraswati tattwa as this limits you. One should move on Maha Saraswati tattwa. If Saraswati tattwa is the seed then the tree is Maha Saraswati. Till you do not make this seed into the Maha Saraswati till then you cannot merge with Maha Laxmi. The gift of Mahalaxmi within you is that you get your self-realisation. All the three, i.e. Mahalaxmi, Maha Saraswati and Maha Kali meet at Agya. In every subtle way there is an ego. So one should introspect within as to why we believe in such a thing. I am sitting in a limited field then how can I enlighten the whole world? I have said many times look towards yourself. I know many people believe me and worship me as the Devi., but what is the benefit for me in this? I am what I am. You are the ones who have achieved. You came to Sahaja Yoga and from, Saraswati tattwa you reached Maha Saraswati tattwa. You have gained not me. You should not be satisfied by just believing in me. You will have to believe in yourself and lift yourself.

Now you know the science of Sahaja Yoga. Your candle has been lit. Not this candle has to enlighten thousands of others. To love me is beautiful. But there is a further state than this. Beyond joy there is another state called Niranand. That state of Niranand will come to your Mother when she will see that Her children have gone even further than Her. But these small petty things still stuck with us must be given up. In Maharastrians it is even more, that we are stuck in small pettinesses. I feel it must be the demerits of past lives. If he had good merits then he would immediately open his heart and start emitting fragrance like a flower.

In Maha Saraswati one should be efficacious and active. In Mahakali tattwa you absorb and you desire. I want to do this or that. I like this or that. I like this. To activate these desires is the work of Maha Saraswati. Some people wish that Sahaja Yoga spreads. But in this respect what did you do for it to spread? How many people did you give

self realisation to? How many did you talk to about Sahaja Yoga? One journalist told me how he was impressed by the young boys and girls who were so peacefully and in a dignified manner putting posters. I was very impressed by that. **You must put your desires into action. Your desires will finish when your action will start.** You should desire what can be done, for to desire something which cannot be fulfilled is a calamity.

There are many rich and many poor here. Even the rich have similar problems to the poor. They tell me that there is labour problems and that is why our factories are closed. **But the rich must remember that the labour is your part and parcel. You cannot do anything without them.** You do not even know how to move a finger; you just keep sitting on a chair. What have you done for the labour? Everything cannot be solved with money. They raise a flag, you raise their money. Then they again raise a flag and this goes on. **Have you done something for their welfare? First learn their culture.** There are big industrialists who do not know their culture. **The labour are very large hearted.** But if you deal with them with haughtiness then they can be the greatest enemies. **Stay with them, meet them, get to know them. I call this enlightened entrepreneurs. Go to their homes, ask after their problems.** You do this little for them and they will be at your service for life. It is not necessary that you give money for everything. If you give money they may go straight to the liquor shops or keep women. **Think of them as a part and parcel of yourself and get to know their hearts. And then all your labour problems will be solved.**

The people here are limited only till Saraswati and not Maha Saraswati. You are Sahaja Yogis, things will get alright themselves. But you have to follow the methods of Sahaja Yoga. You will have to leave your narrow view points and spread. Till you do not rise from within you cannot spread on the outside. **In Sahaja Yoga meditation is very important. Meditate for five minutes at five in the morning and ten minutes at night.** With this you will keep getting cleansed and will receive blessings. All the time you are being guided. You are also enjoying and growing.

People still think that it enough to keep on loving Mother, serving Her and praying to Her. It is fine.

small road, or even a small hut. I cant understand that there are so many poeple still nothing gets done. When I go away you all separate and go your own way. Just two or three people work. Sahaja Yoga is a collective work and not just the work of two or three people. One must underst and that each Sahaja Yogi is a part of Sahaja Yoga. If one finger is hurt the whole body feels the pain. Everything is spontaneous, Sahaja. But this

You do get the benefit. **You may have grown very deep in your Mother's love. What is the use of such a deep pot in which no one fills water.** If you think on Agya what sort of work I should do, **if you go into Nirvichara (thoughtlessness) then you will get inspiration from inside.** There are many deep people here but now we have to share that depth. Like in a pond some lotuses bloom and the insects feel proud of the lotuses. But you are still an insect. Whats the use.

In the Vedas it is said that if you do not have the Vid (knowledge) then what is the use of Veda. They tried to awaken the Pancha Mahabhutas. It was a result of which science came into our country. The scientific research done here was much greater than what research is being done today. **Through Sahaja Yoga you can also get the control of the Pancha Mahabhutas. But here you are still saying 'Mother, my mo' or or brother or family is ill.'** You are a Sahaja Yogi. You want Mother to do everything. Why cant you? Just try to give to others. I keep repeating again and again that you do something. Of course I will cure but you can cure better than me. if you are not able to cure then come to me. **The more you use your powers the more they will grow. But have faith in yourself.** If mother has said so then we must have got these powers within and we must increase them. **Now depth has come in Sahaja Yoga but the giving of it is still not so much.** You have to give now. When you become active and Maha Saraswati chakra is awakened you will be amazed where this country will reach. But this disease of laziness is there throught out India.

Sahaja Yoga **people make lots of excuses as to why they cant do.** For example "I am afraid of the masses or my family etc." **Sahaja Yoga is not for cowards.** There is so much black magic and tantrism here and I have been cleaning it. For removal of Kali vidya you will have to pay special attention and work it out.

This puja today is for the whole of India as this disease of laziness is there in the whole of India. **We are not at all active. We have very strong desires but no action.** You should get together and talk about what you can do by which you can spread Sahaja Yoga. We bought lands for various purposes. They are just lying there rotting. Till I dont come to India they cannot even make a

narrow mindedness does not let go of you, and this ignorance that we are something important.

You have gained so much depth and got so much. Now you must give it to others. Tomorrow you can sit in my place and do my work. When this happens only then will Sahaja Yoga grow. I bless you that now many people may emerge after this puja who will do this work of spreading Sahaja Yoga.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

ह्या कलीयुगात आईला ओळखणे फार कठीण आहे. आपल्या स्वतःच्या आईला आपण जाणू शकत नाही, तर मग मला जाणणे हे त्याहून कठीण आहे. पण ह्या योगभूमीची गहनता तुमच्यामध्ये कार्यरत झाली आहे. ह्या भागातून येणारा कोणताही सहजयोगी अत्यंत गहनतेत जातो, हे मी पाहिले आहे. मला आश्चर्य वाटतं की, जिथे इतकी वर्षे मी घालवली, इतके कार्य केले, तेथील लोक इतके गहन नाहीत. इथल्यासारखी इतकी सुरेख सामूहिकता त्यांच्याकडे नाही. ह्या भूमीचा, विशेष म्हणजे इथलं प्रेम आणि सामूहिकता ही पूर्णतः निःस्वार्थी आहे, हे बघून मला अत्यंत आनंद होतोय. तुमची उत्तरोत्तर प्रगती होवो.

महासरस्वतीची इथे उपासना होणे फार महत्वाचे आहे. ह्या भूमीला तिने आशीर्वाद दिले आहेत. इथे सर्व काही हिरवेगार आहे, पण ही सरस्वतीची उपासना फार सीमित आहे. इथले कष्ट आणि दारिद्र्य यांचे कारण हे आहे. आपल्या कलागुणांची वृद्धी करण्यासाठी किंवा विद्वान बनण्यासाठी इथे सरस्वतीची पूजा केली जाते. इथले लोक फार हुशार आणि अभिमानी आहेत, पण तरीही दारिद्र्य कां? तुमच्याहून जास्त पैसा असणाऱ्या माणसाविषयी हेवा का? आपल्याकडे कोणत्या सूत्राची कमतरता आहे, जे आपल्याला मिळवायचे आहे, ते आपण जाणून घेतले पाहिजे.

सरस्वतीचे कार्य उजव्या बाजूकडे आहे. ज्यावेळी ती स्वाधिष्ठानवर कार्य करते आणि ते डावीकडे जाते, त्यावेळी कलेची संवेदना वाढीस लागते. प्रत्येक कलेच्या क्षेत्रात बंगाल प्रसिद्ध आहे. संगीत, नाट्य, मूर्तिशास्त्र आणि साहित्य या कलाक्षेत्रातील अनेक ख्यातनाम लोक इथे आहेत. कला ही देवाचा प्रकाश आहे. तुम्ही पाहू शकत नाही, पण तिला व्हायब्रेशन्स असतात. जगभराच्या लोकांनी ज्याला दाद दिली आहे आणि जे फार सुरेखरीत्या निर्माण केलेले आहे ते सौंदर्यदृष्ट्या समृद्ध असतं, त्या कलाकृतीकडे तुम्ही हात केल्यास त्यामधून व्हायब्रेशन्सचा प्रवाह तुम्हाला जाणवेल. जर ती आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तीने केली असली तर जास्तच. इथे राहणारे फार भक्तियान आहेत व कलेचे विविध प्रकार ते सहजगत्या जाणतात. बंगालचे लोक प्रत्येक गोष्ट पूर्णत्वाला नेणारे आहेत. आपण स्वाधिष्ठानाची फक्त एक बाजू विकसित केली आहे. फक्त लिहिण्यावाचण्यासाठी आपण स्वाधिष्ठान वापरतो आणि या क्षेत्रात आपण उन्नती केली आहे, पण या पुढची एक पातळी आहे. ज्याविषयी आपण विचारच करीत नाही आणि त्यामुळेच असंतुलन होते. जेव्हा तुम्ही बरेचसे साहित्य कला वगैरे पहाता आणि लोक म्हणतात, लक्ष्मी व सरस्वतीचा मिलाप नाही त्याचा अर्थ, जे काही तुम्ही करीत आहात, त्याच्या खोलात गेल्यावर तुम्ही विचार करता, इथे लक्ष्मीची साथ का नाही? सहजयोगामध्ये दोघी आज्ञा चक्रावर भेटतात. तुम्ही काम करीत राहता, पण तुम्हाला हवा तो परिणाम मिळत नाही. जेव्हा तुम्ही आज्ञा चक्रावर येता, त्यावेळी तुम्हाला कळतं की, अनेक कलाकारांना गवसलेली ती स्थिती आपल्याला मिळाली नाही. आपण दारिद्र्यात का राहत आहोत? जोपर्यंत आपण ती स्थिती गाठत नाही, जिथे दोन्ही अंगे योग्य सापेक्ष प्रमाणात

आपण बघत नाही तोपर्यंत आपण प्रगती करू शकत नाही. कलेबरोबर लक्ष्मीची सांगड जुळण्यासाठी आपल्याला योग्य दृष्टी पाहिजे.

आपला एक मोठा दुबळेपणा म्हणजे हट्टीपणा. जर त्यांनी हत्ती केला असेल तर ते हत्तीच बनवित बसतील. जर ते अमुक एका प्रकारे गात असतील तर ते त्याचप्रकारे गात राहतील. तुम्ही त्यांना काही बदल करायला सांगितला तर, तुमच्या लक्षात येईल. तेव्हा हा हट्टीपणा तुम्हाला आज्ञा चक्राबाहेर पडू देत नाही. आम्ही बंगाली आहोत. आमच्याकडे सर्वात महान कलाकार, बुद्धिमान लोक आहेत. आपल्यामध्ये हा अट्टाहास असतो की, आम्ही बंगालमधील लोक सर्वात महान आहोत. तुम्ही कलेचा विनाश करा असे मी म्हणत नाही, पण तुम्ही संतुलित दृष्टीने कलेचा विचार केला पाहिजे. मी तुम्हाला काहीतरी व्यवहार्य गोष्ट सांगत आहे ती अशी की, आपल्याकडे एक प्रकारचा आळशीपणा असतो ज्यामुळे सुद्धा आपण हट्टी बनू शकतो. नवनिर्मिती करायला मला श्रम करावे लागतील असं एखाद्या व्यक्तीला वाटते. नवं काही शिकण्यासाठी आपले मेंदू थोडेसे मंदच आहेत. या मंदबुद्धीमुळे ज्यायोगे आपण लक्ष्मीशी सांगड घालू शकू असं काही आपण शिकू शकत नाही. जसं काही कलाकारांना मोठ्या पर्सस करू नका, साध्या तऱ्हेने करा असं म्हटलं तर ते म्हणतात, 'ते शक्य नव्हतं आम्ही ज्या पद्धतीने त्यामध्ये रुळलो आहोत तसेच आम्ही करू. तुम्हाला हवं तसं नाही. काही समजून घेतले पाहिजे तर, मेंदू आत्मसात करू शकतो, पण जर तुम्ही हट्टी असाल आणि 'मी जे काही करत आहे तेच बरोबर आहे' असे म्हणाल तर त्याचा व्यक्तीच्या पूर्ण जीवनावर खूपच मोठा परिणाम होतो. बदल येतो तेव्हा तो फार सहजगत्या येतो आणि सहजगत्या तुम्ही लक्ष्मीशी मिलाप झालेला पहाता. कलाकार फार हट्टी असतात तुम्ही जर त्यांना म्हटलं, 'कृपा करून हे थोडेसं बदला, तर ते लोक तसे करणार नाहीत. आज्ञा चक्राला व्यवस्थित ठेवण्यासाठी हा विचित्र अहंकार आपण आधी बरोबर केला पाहिजे. आपण जे करतो, ज्याप्रकारे करतो, ते बरोबर आहे किंवा दुसरी कोणतीही सूचना किंवा पद्धत चूक हेच तो म्हणत असतो.

तुम्ही हिंदू, मुसलमान, ख्रिश्चन, ब्राह्म समाजाचे वगैरे आहांत असे वाटणे याला काहीच आधार नाही. तुम्ही दुसरे काहीही नाही. फक्त माणूस आहांत, माणूस म्हणून तुम्ही जन्मला. तुम्ही कोणी तरी आहांत असा ठसा तुम्हीच तुमच्यावर लादून घेतला आहे. तुम्ही बंगाली किंवा मराठी नसून फक्त मानव आहांत. स्वतःवर असे ठसे मारून घेऊन तुम्ही आणखी प्रश्न निर्माण करता. हे छापच इतके महत्त्वाचे होतात की त्यापलीकडे तुम्हाला काही दिसत नाही. ही बाधा जोपर्यंत जात नाही, तोपर्यंत हा आंधळेपणा जाणार नाही कारण प्रत्येक गोष्ट तुम्ही अशाप्रकारे बघता की, की फक्त तुमचाच मार्ग बरोबर आहे. पाश्चात्य देशात तर हे जास्तच आहे. त्यांच्या मेंदूत काहीही घातलं आणि ते योग्य आहे असे त्यांना सांगितले, तर ते आंधळ्यासारखे त्याच्यामागे जातात. तिथले टीकाकारही प्रत्येक कलाकृतीवर इतकी टीका करतात. एका टीकाकाराचे मत दुसरा खोडून काढेल. तुमच्यामधून, तुमच्या मेंदूमधून काहीच येत नाही. इतरांनी जे काही डोक्यात भरले आहे, त्यांचाच स्वीकार केला जातो. प्रत्येकावर ठसा असतो. त्यामुळे त्याचा अहंकार वाढतो. ती स्वतः फार महान व्यक्ती आहे आणि इतरांहून वेगळी असामान्य व्यक्ती असे त्यांना वाटते. ती व्यक्ती वैयक्तिक होतो.

सत्याचं मूळ तत्त्व आहे की, आपण सगळे एक आहोत. पूर्ण आहोत. सगळे एकत्र आहोत. त्याच्या तुम्ही

जेव्हा विरोधात जाता तेव्हा तुम्ही फक्त वैयक्तिक होता. अधिकाधिक वेगळे होत जाता. एक पान दुसऱ्यासारखं दिसत नाही, हे खरं आहे, पण ती सारी त्याच झाडावर असतात. विराटाचे ती अंग-प्रत्यंग असतात. ज्यावेळी आपण आपल्याला वेगळे करतो तेव्हा सरस्वती तत्त्व ज्याने महासरस्वती झाले पाहिजे ते होत नाही. जेव्हा तुम्ही महासरस्वती तत्त्वात असता तेव्हा तुमचं दैनंदिन जीवन तुम्हाला पूर्णत्वात दिसतं आणि आपण सगळे एक दिसतो. त्यामुळे कलाकार जेव्हा निर्मिती करतो, त्यावेळी तो अशा वस्तू करतो, ज्यांचा हृदयापासून स्वीकार होतो. आपण करतो त्या सर्व कलाकृती सरस्वती मातेला भक्तिभावाने समर्पित केल्या पाहिजेत. सर्व काव्य, संगीत वगैरे. असं जर झालं तर त्या सर्व कलाकृती अमर होतील. गाणी, कलाकृती ज्या देवांच्या नावे केल्या गेल्या त्या अजून जिवंत आहेत. आजचं फिल्म संगीत येतं आणि नष्ट होतं पण कबीर, ज्ञानेश्वरांची गीतं अजून आठवणीत आहेत. आत्मसाक्षात्कारामुळे त्यांना महासरस्वती शक्ती मिळाली आणि त्यांनी जे काही लिहिलं, निर्माण केलं त्याचा प्रकाश अद्वितीय होता. या निर्मितीनेच जगाला एकत्र आणलं. फक्त सरस्वती तत्त्वालाच जागृत करू नये कारण त्यामुळे तुम्ही मर्यादित रहाता, महासरस्वतीला तुम्ही जागृत केले पाहिजे. जर सरस्वती तत्त्व बीज असेल तर महासरस्वती वृक्ष आहे. जोपर्यंत या बीजाला तुम्ही महासरस्वतीमध्ये रूपांतरित करीत नाही तोपर्यंत महालक्ष्मीमध्ये तुम्ही विलीन होऊ शकत नाही. तुमचा आत्मसाक्षात्कार ही तुमच्यामध्ये महालक्ष्मीची देणगी आहे. महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली आज्ञेमध्ये एकत्र भेटतात. फार सूक्ष्म रीतीने तिथे अहंकार येतो, त्यामुळे प्रत्येकाने अंतर्मुख होऊन परीक्षण केलं पाहिजे की, मी जर मर्यादित क्षेत्रात वाढलो आहे, तर पूर्ण जगाला कसं प्रकाशित करू शकेन? कितीदा तरी मी सांगितले आहे, तुम्ही स्वतःकडे पहा. खूप लोक माझ्यावर विश्वास ठेवतात, देवी म्हणून माझी ते पूजा करतात ते मला माहीत आहे, पण यात मला काय फायदा आहे? मी आहे तीच आहे. तुम्ही ते आहांत, ज्यांनी साध्य केलं आहे. तुम्ही सहजयोगात आलांत आणि सरस्वती तत्त्वातून तुम्ही महासरस्वती तत्त्वाप्रत पोहोचला. तुम्हाला लाभ झाला आहे. मला नाही. फक्त माझ्यावर विश्वास ठेवून तुम्ही समाधान वाटून घेता कामा नये. तुम्हाला तुमच्यावर विश्वास ठेवला पाहिजे आणि तुम्हाला वर उचलले पाहिजे.

आता तुम्हाला सहजयोगाचे शास्त्र माहीत आहे. तुमची मेणबत्ती पेटवली गेली आहे. आता या मेणबत्तीने इतर हजारोंमध्ये ज्योत जागवली पाहिजे. माझ्यावर प्रेम करणे सुरेख आहे, पण याहून पुढची स्थिती आहे. आनंदापलीकडे दुसरी स्थिती आहे 'निरानंद'. तुमच्या आईमध्ये ती निरानंदाची स्थिती तेव्हाच येईल जेव्हा तिची मुले तिच्याही पुढे गेलेली ती पाहील, पण आपल्याला चिकटलेल्या या लहान सहान क्षुद्र गोष्टी सोडून दिल्या पाहिजे. महाराष्ट्रीयन लोकांमध्ये तर ते जास्तच आहे. क्षुद्र गोष्टीत आपण चिकटलो आहोत. मला वाटते, आपल्या पूर्वजन्मांचा तो अवगुण असावा. जर चांगली गुणवत्ता असती तर, ती व्यक्ती ताबडतोब स्वतःचे हृदय उघडून फुलासारखा सुगंध उत्सर्जित करू लागली असती.

महासरस्वतीमध्ये प्रत्येकाने परिणामकारक व कार्यक्षम असले पाहिजे. महाकाली तत्त्वामध्ये तुम्ही आत्मसात करता, इच्छा करता, 'मला हे करायचे, ते करायचे, मला हे आवडतं, ते आवडतं' या इच्छा कार्यान्वित करणे हे महासरस्वतीचं काम आहे. सहजयोगाचा प्रसार व्हावा अशी काही लोकांची इच्छा असते, पण या विषयात प्रसारांसाठी तुम्ही काय केलं? किती जणांना तुम्ही आत्मसाक्षात्कार दिला? किती जणांशी

सहजयोगाबाबत बोलता ? एका वृत्तपत्रकाराने मला सांगितले, तरुण मुलं-मुली इतक्या शांततेने आणि तन्मयतेने पोस्टर्स लावत होते, त्यामुळे त्याच्यावर छाप पडली. त्यांच्या बोलण्याने माझ्यावर प्रभाव पडला. तुमच्या इच्छा तुम्ही कृतीत आणल्या पाहिजेत. जे आपण करू शकतो, त्याची तुम्ही इच्छा केली पाहिजे कारण ज्या इच्छेची पूर्ती होऊ शकत नाही, ते संकट होते.

इथे अनेक श्रीमंत लोक व अनेक गरीब लोक आहेत. श्रीमंत लोकांचे गरीब लोकांसारखे प्रश्न आहेत. त्यांच्याकडे कर्मचार्यांचे प्रश्न आहेत. म्हणून आमचे कारखाने बंद झाले आहेत. पण कर्मचारी हा तुमचाच एक भाग आहे. अंग-प्रत्यंग आहे. हे श्रीमंतांनी लक्षांत ठेवले पाहिजे. त्यांच्याशिवाय तुम्ही काहीच करू शकत नाही. तुम्हाला तर बोटही कसं हलवायचं ते माहीत नाही. तुम्ही नुसते खुर्चींमध्ये बसता. तुम्ही मजुरांसाठी काय केले आहे ? सर्व प्रश्न पैशाने सुटू शकत नाहीत. ते झेंडा उभारतात, तुम्ही पैसे पुढे करता ; मग ते परत झेंडा उभारतात आणि हे सगळं असंच चालू रहातं. त्यांच्या कल्याणासाठी तुम्ही काही केलं आहे का ? प्रथम त्यांची संस्कृती शिका. मोठमोठे कारखानदार आहेत, ज्यांना त्यांची संस्कृती माहीत नाही. मजूर फार दिलदार आहेत, पण तुम्ही त्यांच्याशी गर्विष्ठपणे वागलांत तर ते तुमचे सर्वांत मोठे शत्रू होऊ शकतात. त्यांच्याबरोबर रहा. त्यांना भेटा, त्यांना जाणून घ्या. त्यांना मी प्रकाशवंत उद्योजक म्हणते. त्यांच्या घरी जा. त्यांचे प्रश्न त्यांना विचारा, हे थोडसं त्यांच्यासाठी करा. जीवनभर ते तुमच्या पदरी राहतील. प्रत्येक गोष्टीसाठी तुम्ही पैसे देणं आवश्यक नाही. तुम्ही पैसे दिले की ते सरळ दारूच्या गुत्याचा रस्ता पकडतील किंवा बायका ठेवतील. तुमचाच एक अविभाज्य भाग म्हणून त्यांचा विचार करा आणि त्यांचं हृदय जाणण्याचा प्रयत्न करा, मग तुमचे सर्व काही 'लेबर प्रॉब्लेम' सुटतील.

इथले लोक फक्त सरस्वतीपुरते मर्यादित आहेत. महासरस्वती नाही. तुम्ही सहजयोगी आहांत आपणहून गोष्टी ठीक होतील, पण सहजयोगाच्या पद्धती तुम्ही वापरांत आणल्या पाहिजेत. तुमचे संकुचित दृष्टिकोन सोडून तुम्हाला पसरलं पाहिजे. आतून वर उठल्याखेरीज बाहेरून तुम्ही पसरू शकत नाही. सहजयोगामध्ये ध्यान फार महत्वाचं आहे. सकाळी ५ वाजता पाच मिनिटं ध्यान करा. रात्री दहा मिनिटं, यामुळे तुम्ही स्वच्छ होत जाल आणि तुम्हाला आशीर्वाद मिळतील. तुम्हाला सतत मार्गदर्शन केलं जात आहे. तुम्ही सुद्धा आनंद उपभोगत वाढत आहात.

अजून लोकांना आईवर प्रेम करणं हेच पुरेसं आहे असं वाटतं. तिची सेवा करणं, प्रार्थना करणं ते ठीक आहे. तुम्हाला फायदा मिळतो. आईच्या प्रेमांमध्ये तुम्ही खूप वाढले असाल. ज्यांत कोणी पाणी भरत नाही अशा खोल भांड्याचा उपयोग काय ? मी काय कार्य करावं, असा जर तुम्ही विचार केला आणि तुम्ही निर्विचारांत गेलात तर तुम्हाला आंतून स्फूर्ती मिळेल. इथे गहनतेमधील अनेक लोक आहेत. पण आता ती गहनता आपण वाटून घ्यायला हवी. एखाद्या तळ्यात जशी काही कमळं उगवतात आणि किड्यांना त्याच्याबद्दल अभिमान वाटतो, पण अजून तुम्ही कीटकच आहांत तर त्याचा काय उपयोग आहे ?

वेदांमध्ये म्हटलं आहे, तुमच्याकडे 'विद' नाही, जाणणे नाही तर वेदांचा उपयोग काय ? त्यांनी

पंचमहाभूतांना जागृत करण्याचा प्रयत्न केला त्याचा परिणाम म्हणून आपल्या देशाकडे शास्त्रे आली. इथे झालेले विज्ञानविषयक शोध आज होत असलेल्या शोधांपेक्षा फार जास्त मोठे होते. सहजयोगदेखील पंचमहाभूतांवर ताबा मिळवू शकतो, पण इथे अजून तुम्ही म्हणत आहांत, 'माताजी, माझी आई, नाहीतर भाऊ, नाहीतर दुसरं कोणी आजारी आहे' तुम्ही सहजयोगी आहांत. सारं काही आईने करावं असं तुम्हाला वाटतं. तुम्ही का नाही करत? नुसतं इतरांना द्या. मी सारखी तेच तेच, परत परत सांगत असते की काहीतरी करा. अर्थात् मी रोगमुक्त करेन, पण माझ्यापेक्षा तुम्ही चांगल्याप्रकारे रोगमुक्त करू शकता. जर तुम्ही करू शकला नाहीत, तर माझ्याकडे या. जेवढ्या तुमच्या शक्त्या वापराल, तेवढी तुमची वाढ होईल, पण स्वतःवर विश्वास ठेवा. श्रीमाताजी म्हणतात तर आपल्याकडे या शक्त्या असणार आणि त्या आपण वाढविल्या पाहिजेत. आता सहजयोगामध्ये गहनता आली आहे, पण दुसऱ्याला देणं काही जास्त नाही. आता तुम्हाला दिलं पाहिजे. जेव्हा तुम्ही कार्यक्षम व्हाल व महासरस्वती चक्राची जागृती होईल, त्यावेळी हा देश कुठे पोहोचेल ते पाहून तुम्हालाच आश्चर्य वाटेल पण हा आळशीपणाचा रोग पूर्ण भारतभर आहे.

ते का करीत नाहीत यासाठी सहजयोगात लोक खूप कारणे दाखवितात. उदा.मला माझ्या कुटुंबाची, नाहीतर समाजाची भीती वाटते. सहजयोग भित्र्यांसाठी नाही. इथे इतके जादुटोणावाले आणि तांत्रिक आहेत आणि ते मी साफ करते आहे. जादुटोणा नष्ट करण्यासाठी तुम्हाला विशेष लक्ष घालून ते कार्यान्वित केलं पाहिजे.

आजची पूजा पूर्ण भारतासाठी आहे कारण हा आळशीपणाचा रोग भारतभर आहे. आपण जराही कार्यक्षम नाही. आपल्या फार दृढ, जबरदस्त इच्छा आहेत, पण क्रिया काहीच नाही. तुम्ही एकत्र येऊन, ज्यामुळे सहजयोगाचा प्रसार कसा होईल याविषयी ठरवलं पाहिजे. वेगवेगळ्या कारणांसाठी आपण जमिनी घेतल्या, त्या सर्व तशाच पडून आहेत. मी भारतात येईपर्यंत त्यांना छोटा रस्ता सोडाच पण एक छोटी झोपडीदेखील बांधता येत नाही. इतके लोक आहेत, पण काहीच होत नाही, कसं ते मला समजत नाही. मी गेले की तुम्ही सगळे वेगवेगळे होता. आपापल्या मार्गाने जाता. फक्त दोन-तीन लोक कार्य करतात. सहजयोग सामूहिक कार्य आहे. फक्त दोघातिघांचं कार्य नव्हे. प्रत्येक सहजयोगी हा सहजयोगाचा भाग आहे हे प्रत्येकाने जाणलं पाहिजे.

तुम्ही इतकी गहनता गाठली आहे आणि इतकं मिळवलं आहे की आता तुम्ही इतरांना दिलं पाहिजे. उद्या तुम्ही माझ्या जागेवर बसून माझे कार्य करू शकाल. जेव्हा असं होईल, तेव्हाच सहजयोग वाढेल. तुम्हाला आशीर्वाद देते की, या पूजेनंतर अनेक लोक बाहेर येतील जे सहजयोग पसरविण्याचं कार्य करतील.